(४)

कङ्काल-मालिनी-तन्त्रे · ईश्वर-देवी-सम्वादे

श्रीगुरु-कवचम्

।। पूर्व-पीठिका ।।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

भूत - नाथ ! महा - देव ! कवचं तस्य मे वद ।
गुरु-देवस्य देवेश ! साक्षात् ब्रह्म - स्वरूपिण: ।।१

।। श्री ईश्वर उवाच ।।

अथ ते कथयामीशे ! कवचं मोक्ष - दायकम् ।
यस्य ज्ञानं विना देवि ! न सिद्धिर्न च सद्-गतिः ।।२
ब्रह्मादयोऽपि गिरिजे ! सर्वत्र जयिनः स्मृताः ।
अस्य प्रसादात् सकला, वेदागम - पुरःसराः ।।३

।। सविधि श्रीगुरु-कवचम् ।।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीगुरु-कवचस्य श्रीविष्णुः ऋषिः, विराट्-छन्दः, गुरुदेव स्वयं शिवः देवता, चतुर्वर्गे ज्ञान-मार्गे पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीविष्णु-ऋषये नमः शिरसि । विराट्-छन्दसे नमः मुखे । गुरुदेव-स्वयं-शिव-देवतायै नमः हृदि । चतुर्वर्गे ज्ञान-मार्गे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

सहस्रारे महा - पद्मे, कर्पूर - धवलो गुरुः ।
वामोरु - स्थित[१] -शक्तिर्यः सर्वत्र[२] परि - रक्षतु ।।१
परमाख्यो गुरुः पातु, शिरसं मम वल्लभे !
परा-पराख्यो नासां मे, परमेष्ठी[३] मुखं सदा ।।२
कण्ठं मम सदा पातु, भैरवानन्द - नाथकः[४] ।
बाहौ[५] द्वौ सनकानन्दः, कुमारानन्द एव च[६] ।।३
वशिष्ठानन्द - नाथश्च, हृदयं पातु सर्वदा ।
क्रोधानन्दः कटिं पातु, सुखानन्दः पदं मम ।।४
ध्यानानन्दश्च सर्वाङ्गं, बोधानन्दश्च कानने ।
सर्वत्र गुरवः पान्तु, सर्वे ईश्वर - रूपिणः ।।५

।। फल-श्रुति ।।

इति ते कथितं भद्रे ! कवचं परमं शिवे !
भक्ति - हीने दुराचारे, दद्यान्मृत्युमवाप्नुयात् ।।१

अस्यैव पठनाद् देवि ! धारणात् श्रवणात् प्रिये !
जायते मन्त्र-सिद्धिश्च [७] किमन्यत् कथयामि ते ।।२
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ, शिखायां वीर - वन्दिते ।
धारणान्नाशयेत् पापं, गङ्गायां कल्मषं[८] यथा ।।३
इदं कवचमज्ञात्वा, यदि मन्त्रं जपेत् प्रिये !
तत् सर्वं निष्फलं कृत्वा, गुरुर्याति सुनिश्चितम् ।
शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता, गुरौ रुष्टौ न कश्चन ।।४

पाठान्तर—[१] गत, [२] सर्वतः, [३] परमेष्ठिः, [४] प्रह्लादानन्द-नाथकः, [५] बाहू, [६] नाथकः, [७] मन्त्राः सिद्धाश्च जायते, [८] कलुषं ।

हिन्दी श्रीगुरु-कवच

श्री देवी बोलीं—हे भूत-नाथ, महादेव, देवेश्वर ! साक्षात् ब्रह्म-स्वरूप उन गुरुदेव का कवच मुझसे कहिए ।।१।।

श्री ईश्वर ने कहा—हे देवि, ईश्वरि ! अब मैं तुमसे मोक्ष-प्रद कवच को कहता हूँ, जिसे जाने बिना न सिद्धि मिलती है और न सद्-गति ।।२।। हे गिरिजे ! इसके प्रसाद से ही समस्त तन्त्र-शास्त्र के आगे रखनेवाले ब्रह्मा आदि भी सभी स्थानों में विजयी माने जाते हैं ।।३।।

।। सविधि श्रीगुरु-कवच ।।

पहले पृष्ठ २६ के अनुसार विनियोग एवं ऋष्यादि-न्यास करे । तब कवच-स्तोत्र का पाठ करे

सहस्रार के महान् पद्म में कपूर के समान उज्ज्वल वर्णवाले गुरुदेव, जिनकी जाँघ से सटीं उनकी शक्ति (धर्म-पत्नी) विराजमाना हैं, सभी स्थानों में मेरी रक्षा करें ।। १ ।। हे प्रिये ! 'परम' नामक मेरे सिर की, 'परापर' नामक मेरी नासिका की और 'परमेष्ठी' मेरे मुख की सदा रक्षा करें ।। २ ।। भैरवानन्दनाथ मेरे कण्ठ की और सनकानन्दनाथ तथा कुमारानन्दनाथ मेरी दोनों भुजाओं की सदा रक्षा करें ।। ३ ।। वशिष्ठानन्दनाथ सदैव मेरे हृदय की रक्षा करें और क्रोधानन्दनाथ मेरी कटि (कमर) की तथा सुखानन्दनाथ मेरे पैरों की रक्षा करें ।। ४ ।। ध्यानानन्दनाथ मेरे सारे शरीर की, बोधानन्दनाथ वन-उपवन में, और ईश्वर-स्वरूप सभी गुरु समस्त स्थानों में मेरी रक्षा करें ।। ५ ।।

।। फल-श्रुति ।।

हे भद्रे, शिवे ! यह श्रेष्ठ 'कवच' कहा है । भक्ति-हीन, दुराचारी व्यक्ति को इसे बताने से मृत्यु हो जाती है ।।१।। हे प्रिये, देवि ! इसका पाठ या श्रवण करने से या इसे धारण करने से मन्त्र सिद्ध होते हैं । और तुमसे क्या कहूँ ? ।।२।। हे वीर-वन्दिते ! कण्ठ में, दाईं भुजा में या शिखा में इसे रखने से यह पापों को उसी प्रकार नष्ट करता है, जैसे गङ्गा में पातक नष्ट हो जाते हैं ।।३।। हे प्रिये ! इस कवच को जाने बिना यदि कोई मन्त्र का जप करता है, तो वह व्यर्थ होता है और गुरुदेव उसे त्यागकर चले जाते हैं, यह सर्वथा निश्चित है । शिव के रुष्ट होने पर गुरुदेव रक्षा करते हैं, किन्तु गुरु के रुष्ट होने पर कोई रक्षा नहीं करता ।।४।।